Toppersnotes®
Unleash the topper in you

उत्तराखण्ड

राज्य सिविल सेवा

उत्तराखण्ड सम्मिलित राज्य सिविल/प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा

भाग - 9

कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

कला एवं संस्कृति

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	संस्कृति	1
2.	वास्तुकला/स्थापत्यकला	3
3.	मूर्तिकला और कलाकृतियाँ	39
4.	भारत में मृद्भांड	50
5.	भारत में सिक्के	52
6.	चित्रकला	55
7.	धर्म	69
8.	दर्शन	78
9.	भारत में भाषाएँ	82
10.	साहित्य	87
11.	भारतीय संगीत	100
12.	नृत्य	114
13.	हिंदी रंगमंच	121
14.	भारतीय कठपुतली कला	128
15.	विज्ञान एवं तकनीक	131
16.	भारत में मार्शल आर्ट	136
17.	मेले एवं त्यौहार	138

18.	भारतीय सिनेमा	**143**
19.	कलारूप	**145**
20.	संस्थाएं	**154**
21.	सरकारी कानून और संस्कृति	**159**
22.	पुरस्कार और सम्मान	**162**
23.	महत्वपूर्ण व्यक्तित्व	**166**
24.	भारत के महत्वपूर्ण प्राचीन विश्वविद्यालय	**170**
25.	भारत में महत्वपूर्ण मठ	**172**

1 CHAPTER संस्कृति

- किसी देश के **सांस्कृतिक मूल्य** एवं **परम्पराएँ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष** रूप से उस देश की **भौगोलिक** एवं **जलवायविक दशाओं** से **प्रभावित** होती है क्योंकि इस पृष्ठभूमि में ही उस देश का **सामाजिक**, **आर्थिक**, **राजनीतिक**, **धार्मिक** एवं **सांस्कृतिक ढाँचा** निर्मित होता है।
- इसके अतिरिक्त उस देश के निवासियों का **चिंतन**, **रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान, नृत्य, त्योहार** एवं **परम्पराओं** से भी **प्रभावित** होता है।
- औद्योगिक क्रांति के बाद विकसित **भौतिक समृद्धि** से उत्पन्न **वैज्ञानिक** एवं **तकनीकि प्रगति** और **सूचना** एंव **संचार** ने सभी देशों के **सांस्कृतिक मूल्य को गहरे रूप से प्रभावित** किया है।

अर्थ

- **संस्कृति** - किसी समाज में निहित **उच्चतम मूल्य** की **चेतना**, जिसके अनुसार वह समाज अपने जीवन को ढालता है।
  - संस्कृत भाषा की **धातु 'कृ'** (करना) से बना है, जिसका **अर्थ** है **परिष्कृत स्थिति।**
  - अर्थात् जब **प्रकृत/ कच्चे संसाधन को परिष्कृत** किया जाता है तो वह **संस्कृति** हिस्सा बन जाता है।
  - अंग्रेजी शब्द **'कल्चर'** लैटिन भाषा के **'कल्ट या कल्टस'** से लिया गया है जिसका अर्थ है विकसित या **परिष्कृत करना।**
  - संक्षेप में किसी वस्तु को इस हद तक **संस्कारित और परिष्कृत करना** कि इसका **अंतिम उत्पाद** हमारी **प्रशंसा** और **सम्मान** प्राप्त कर सके।

संस्कृति की अवधारणा

- संस्कृति **जीवन की विधि** है, जो **भोजन** हम खाते हैं, जो **कपड़े** हम पहनते हैं, जो **भाषा** हम बोलते हैं और जिस **भगवान** की हम पूजा करते हैं, ये सभी **संस्कृति** के **पक्ष** है।
- अतः एक **सामाजिक वर्ग** के सदस्य के रूप में **मानवों** की सभी उपलब्धियाँ **संस्कृति** कही जा सकती है, **उदाहरण** कला, संगीत, साहित्य, शिल्पकला, धर्म, दर्शन आदि।
- इस प्रकार संस्कृति, **मानव जनित पर्यावरण** से संबंध रखती है जिसमें सभी **भौतिक और अभौतिक उत्पाद एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी** को **स्थानांतरित** किये जाते हैं।
- संस्कृति, मानव के **शारीरिक** तथा **मानसिक संस्कारों का सूचक** है अर्थात् संस्कृति मानव समाज के संस्कारों का **परिष्कार** और **परिमार्जन** है जो कि एक **सतत प्रक्रिया** है।
- दूसरे शब्दों में मनुष्य के लिए जो **वांछनीय** अर्थात् मंगलमय है वह **संस्कृति का अंग** है।
- संस्कृति का एक अर्थ **अत:करण की शुद्धि** और **सहदयता** भी है

संस्कृति की विशेषताएँ

- संस्कृति हमारी **प्रकृति की अभिव्यक्ति** है।
- यह हमारे **साहित्य** में, **धार्मिक** कार्यों में, **मनोरंजन** एवं आनन्द प्राप्त करने के तरीकों में देखी जा सकती है।
- **भौतिक** एवं **अभौतिक** रूप में संस्कृति **मानव जनित पर्यावरण** से **संबंध** रखती है।
- भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी है जो हमारे **जीवन के भौतिक पक्षों से जुड़ाव** रखती है, जैसे हमारी वेश-भूषा, खान-पान व घरेलू वस्तुएँ आदि।
- **अभौतिक-संस्कृति** का संबंध **विचारों**, **आदर्शो**, **भावनाओं** और **विश्वासों** से है।
- **संस्कृति** एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक देश से दूसरे देश में **बदलती रहती** है।
  - इसका विकास एक **स्थानीय**, **क्षेत्रीय** अथवा **राष्ट्रीय** संदर्भ में विद्यमान **ऐतिहासिक प्रक्रिया** पर आधारित होता है।
  - **उदाहरण** - देश के विभिन्न हिस्सों में अभिवादन की विधियों में, हमारे वस्त्रों में, खाने की आदतों में, सामाजिक एवं धार्मिक रीति रिवाजों और मान्यताओं में भिन्नता है।
- संस्कृति **आंतरिक अनुभूति** से **सम्बद्ध** है जिसमें **मन** और **हृदय** की **पवित्रता निहित** है
- इसमें **कला**, **विज्ञान**, **संगीत**, **नृत्य** और **मानव जीवन** की **उच्चतर उपलब्धियाँ** सम्मिलित है, जिन्हें **सांस्कृतिक गतिविधियाँ** कहा जाता है।

संस्कृति और विरासत

- पूर्ववर्तियों से हमें जो **संस्कृति विरासत में** मिली है, उसे सांस्कृतिक विरासत या राष्ट्रीय विरासत, मानव विरासत आदि कहा जाता है।
- **संस्कृति बदल सकती** है, लेकिन **विरासत नहीं।**

संस्कृति का महत्व

- सत्य के **तीन शाश्वत मूल्य, सत्य** (दर्शन और धर्म), **सौंदर्य** (कला और वास्तुकला) और **अच्छाई** (नैतिकता और प्रेम, सहिष्णुता के मूल्य) संस्कृति से जुड़े हुए हैं

- **सामूहिक ज्ञान** वह है जो हमें **मानव बनाता** है और इसे **अंतर** और **अंतः पीढ़ियों** (संस्कृति) के बीच **साझा** किया जा रहा है

संस्कृतिओं के अध्ययन का महत्व

1. **व्यक्ति की दृष्टि से महत्व -**
   - किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण **खान-पान, व्यवहार, वेश-भूषा, सोच एवं आदतों** द्वारा किया जाता है
   - संस्क्रति व्यक्ति का **नियमन एवं समाजीकरण का कार्य** करती हैं।
   - अतः व्यक्तियों को **समग्रता में जानने के लिए संस्कृति का अध्ययन अपरिहार्य** होता है।
2. **सामाजिक दृष्टि से महत्व**
   - संस्कृति का निर्माण मुख्यतः **सामाजिक प्रयासों की देन** है।
   - संस्कृतियाँ **समाजों** को **जोड़ने का कार्य** करती हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए अनेक तीज-त्योहारों, मेलों, उत्सवों आदि विकास हुआ है
   - प्रत्येक समाज अपनी **आवश्यकताओं** के **अनुरूप** संस्कृति के अनेक **तत्वों** जैसे - कला, धर्म, दर्शन विज्ञान, आचार-व्यवहार, परंपरा आदि **का निर्माण** करता है।
   - अतः **समाज** को **समझने** के लिए भी **संस्कृति** को **समझना** अत्यंत **महत्त्वपूर्ण** है।
3. **राष्ट्रीय दृष्टि से महत्व**
   - संस्कृतियाँ **राष्ट्रीय पहचान** का **निर्धारण** करती हैं क्योंकि इसका **निर्माण** राष्ट्र के तहत आने वाले **निवासियों के सामूहिक योगदान** से होता है।
   - संस्कृतियाँ विभिन्न **राष्ट्रों को जोडने का भी कार्य** करता है।
   - भारत सहित विश्व में अनेक ऐसे देश है जिनकी संस्कृति का विस्तार राष्ट्रीय सीमा के बाहर तक है। अतः राष्ट्रीय दृष्टि से भी इसका **महत्व अत्यधिक** है।

संस्कृति (Culture) एवं सभ्यता (Civilisation)

- संस्कृति एवं सभ्यता **एक दूसरे से सम्बंधित** अवधारणाएं है।
- इन दोनों, शब्दों के अर्थ एवं व्यवहार को लेकर **विद्वानों के बीच आम राय नहीं** है।
- **संस्कृति**, मानव की विभिन्न पीढ़ियों द्वारा अर्जित **एक मानवीय पूँजी** हैं जिसके तहत धर्म, दर्शन, चिंतन, विचार कला, विज्ञान, भाषा साहित्य, आचार, व्यवहार, रीति-रिवाज, जीवन-शैली आदि आते हैं।
  - संस्कृतियों की जड़ में **मूल्य एवं आदर्श निहित** होते हैं।
- **सभ्यता** संस्कृति के **मानकीकरण** (Standardization) की एक विशेषता है।
  - **सांस्कृतिक यात्रा** के द्वारा **मानव** द्वारा जब एक **उन्नत तकनीकी स्तर** तथा **उच्च आर्थिक समृद्धि** को प्राप्त कर लिया जाता है तो उसे सभ्यता कहा आता है।
  - सभ्यता के अवस्था में **विचलन** (deviation) हो सकता है।
  - यही कारण है **सभ्यता का पतन** हो सकता है, **संस्कृतियों का नहीं**
    - **जैसे** - हडप्पा एवं मेसोपोटामिया की सभ्यताएँ आदि।

संस्कृति एवं सभ्यता में अंतर

सभ्यता में मनुष्य का भौतिक पक्ष प्रधान होता है	संस्कृति में आचार, विचार की प्रधानता होती हैं
सभ्यता का विकास अल्पकाल में भी संभव हैं	संस्कृति का निर्माण लम्बी परम्परा के कारण होता हैं
सभ्यता की आधारशिला संस्कृति हैं पर सभ्यता में सुधार संभव हैं	संस्कृति की जड़ें गहरी व अपरिवर्तनशील होती हैं
सभ्यता शरीर और ब्राह्म व्यवहार को दर्शाती हैं	संस्कृति आत्मा और आंतरिक व्यवहार को दर्शाती हैं

भारतीय संस्कृति की विशेषताएं

- निरंतरता और परिवर्तन
- धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण
- सार्वभौमिकता (शांति, गुटनिरपेक्षता, विश्व बंधुत्व)
- विविधता और एकता
  - दुनिया के सभी प्रमुख धर्म यहां हैं
  - भूगोल और जलवायु
  - विदेशी प्रभाव (ईरानी, यूनानी, अरब, ब्रिटिश)
  - अलग-अलग जातियां
  - क्षेत्रीय परस्पर मेलजोल
  - विचारों को आत्मसात करने की उल्लेखनीय क्षमता
  - व्यापार, तीर्थयात्रा, सैन्य अभियान
  - भौतिकवादी और आध्यात्मवादी

2 CHAPTER

वास्तुकला/स्थापत्यकला

वास्तुकला कला और विज्ञान है जो **भवन** और **गैर-भवन संरचनाओं** के **डिजाइन** से **संबंधित** है। भारत में वास्तुकला **सिंधु घाटी सभ्यता से शुरू** हुई और मंदिरों, स्तूपों, शैल्कर्तित गुफाओं, महलों, किलों आदि जैसी विभिन्न **संरचनाओं का निर्माण** हुआ।

पाषाण कालीन/स्थापत्य कला

- भारत में **पाषाणकालीन मानवों द्वारा निर्मित** वास्तुकला का **उदाहरण नहीं** मिलता।

महापाषाण काल

- महापाषाण काल के **लोगों द्वारा** उनके **कब्रिस्तानों** को **पत्थर** से **सजाने** का उदाहरण मिलता है।
- दक्षिण भारत में इस प्रकार **शवों** को **दफनाने** की **परम्परा लौह युग** के साथ आरंभ हुई।
- महापाषाण कालीन **दफन करने के उदाहरण** बड़ी संख्या में निम्न स्थानों जैसे **महाराष्ट्र** (नागपुर के पास) **कर्नाटक** (मास्की), **आंध्र प्रदेश** (नागार्जुनकोंडा), **तमिलनाडु** (आदिचन्नालुर) तथा **केरल** में पाये गये है।

दक्षिण भारत में महापाषाण/वृहत्पाषाण संस्कृति

- एक **पूर्ण लोहयुगीन संस्कृति।**
- औजारों के लिए **पत्थरों का कम प्रयोग।**
- दक्षिण भारत में लौह युग के बारे में **अधिकांश जानकारी महापाषाणकालीन कब्रों की खुदाई से प्राप्त** होती है।
- सभी **महापाषाण स्थलों में लोहे की वस्तुएं** मिलीं - विदर्भ क्षेत्र (मध्य भारत) में नागपुर के पास जूनापानी से लेकर सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु में आदिचनल्लूर तक हैं।

मेगालिथ के प्रकार

- दक्षिण भारत के विभिन्न स्थलों पर किए गए अन्वेषणों और उत्खनन के आधार पर -
    - **रॉक कट गुफाएं/ शैलकर्तित गुफाएं-**
        - **यह पश्चिमी तट के दक्षिणी भाग** में पाए जाने वाले नरम लेटराइट पर उकेरी गई हैं।
        - **पश्चिमी तट** क्षेत्र में और **केरल** के कोचीन और मालाबार क्षेत्रों (विशुद्ध रूप से महापाषाण) में पाए जाते हैं।
        - **दक्षिण भारत का पूर्वी तट**- मद्रास के पास मामल्लापुरम (महाबलीपुरम)।
        - **दक्कन और पश्चिमी भारत** - एलीफेंटा, अजंता, एलोरा, कार्ले, भाजा आदि (अन्य उद्देश्यों के लिए)।
    - **हुड स्टोन्स और हैट स्टोन्स / कैप स्टोन्स / टॉपिकल/ फणाकृति पाषाण** -
        - **शैलकर्तित गुफाओं** से सम्बन्ध लेकिन सरल।
        - **गुंबदाकार लेटराइट ब्लॉक** से बना होता है जो एक प्राकृतिक चट्टान में काटे गए भूमिगत गोलाकार गड्ढे को कवर करता है और इसमें सीढ़ी भी होती हैं।
        - फणाकृति पाषाण के ऊपर एक **हैट स्टोन** या टॉपपिक्कल-**एक समोत्तल स्लैब** होता है जो तीन या चार चतुर्भुज क्लिनोस्टेटिक शिलाखण्ड पर टिका होता है।
        - एक **भूमिगत गड्ढे** को कवर करता है **जिसमें अंत्येष्टि कलश** और **अन्य कब्र** सामग्री होती हैं।
        - **कोचीन** और **मालाबार** क्षेत्रों में पाया जाता है।
    - **मेनहिर -**
        - **अखंड स्तंभ** जमीन में लंबवत लगाए जाते हैं।
        - **ऊंचाई** में **छोटा या विशाल** हो सकते है (16 फीट - 3 फीट)।
        - **समाधि स्थल** पर **या उसके निकट स्थापित**।
        - **प्राचीन तमिल साहित्य** में **नादुकल** / **पांडुक्कल** या **पांडिल** के रूप में उल्लेख किया गया है।
    - **संरेखण-**
        - **मेनहिर के साथ** घनिष्ठ रूप से **जुड़ा** हुआ है।
        - **चतुर्दिश** में **उन्मुख खड़े पत्थरों की एक श्रृंखला** से मिलकर बनता है।
        - **केरल** के **कोमल परथल** और **कर्नाटक** के **गुलबर्ग**, **रायचूर**, **नल्गोंडा** और **महबूबनगर** जिलों में **पाए जाते हैं**।
    - **अवेन्यू/द्वार-**
        - **संरेखण की दो या दो से अधिक समानांतर पंक्तियों** से मिलकर बनता है।
    - **डोलमेनॉइड ताबूत/सिस्ट-**
        - **कई ऊर्ध्वस्थिति पाषाणों से बने वर्गाकार या आयताकार बॉक्स** जैसी कब्रों से मिलकर बनता है।
        - **सजाया** और अलंकृत किया **जा सकता है।**
        - **तमिल नाडु** में प्रमुख रूप से पाया जाता है।
    - **शिला-वृत्त**
        - पूरे दक्षिण भारत में पाए जाने वाले सबसे लोकप्रिय प्रकार के महापाषाण स्मारक।
        - शिलाखंडों से घिरे पत्थर के मलबे के ढेर से मिलकर बनता है।

- **3 उपप्रकार:**
  - ✓ **गर्त शवाधान**
    - ☞ प्राकृतिक मिट्टी में खोदे गए गहरे गड्ढों से मिलकर बनता है।
    - ☞ गोलाकार, चौकोर या तिरछा।
    - ☞ कंकाल के अवशेष और कब्र के फर्नीचर को फर्श पर रखा गया है
    - ☞ चेंगलपट्टु (तमिलनाडु), चित्रदुर्ग और गुलबर्गा (कर्नाटक) जिलों में पाए जाते हैं।
  - ✓ **सरकोफेगी शवाधान**
    - ☞ टेराकोटा/मृणमूर्ति से बना ताबूत।
    - ☞ गर्त शवाधान की तुलना में अधिक व्यापक।
    - ☞ यह गर्त शवाधान के समान है, सिवाय इसके कि कंकाल के अवशेष और कब्र के फर्नीचर के प्राथमिक निक्षेप को एक आयताकार टेराकोटा सरकोफैगस में रखा गया है।
    - ☞ तमिलनाडु के दक्षिण आरकोट, चेंगलपट्टु और उत्तरी आरकोट जिलों और कर्नाटक के कोलार जिले, आंध्र प्रदेश के दक्षिणी जिलों में पाए जाते हैं।
  - ✓ **पाइरीफॉर्म या कलश शवाधान**
    - ☞ कलश, जिसमें अंत्येष्टि की जाती है, मिट्टी में खोदे गए गड्ढों में जमा किए जाते हैं।
    - ☞ गड्ढों को ऊपर तक मिट्टी से भर दिया जाता है और एक आच्छादन शिला/ कैप्स्टोन से ढक दिया जाता है।
    - ☞ केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में पाया जाता है।

सिंधु घाटी सभ्यता कालीन स्थापत्य कला

- **पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार** पर, इस **संस्कृति** के फलने-फूलने की **चरम अवस्था 2100 ई.पू. से 1750 ई.पू.** के बीच अनुमानित है।
- मकानों के निर्माण में सामग्री की **उत्कृष्टता** तथा **दुर्ग**, **सभागारों**, अनाज के **गोदामों**, **कार्यशालाओं**, **छात्रावासों**, **बाजारों** आदि की **मौजूदगी** तथा **आधुनिक जल निकास प्रणाली** वाले **भव्य नगरों** के समान वैज्ञानिक **ले-आउट** देखकर यह **निष्कर्ष** निकाला जा सकता है कि उस काल की **संस्कृति** काफी **समृद्ध** थी।
- **हडप्पा** और **मोहनजोदड़ों** नामक **दोनों राजधानियाँ** उत्तम **नगरविन्यास** का **उदाहरण** हैं। वहाँ के **वास्तु विद्या** आचार्यों ने **दुर्ग** के रूप में उनका **विधान** किया।
- उनके **पुरविन्यास** में **परिखा**, **प्राकार**, **वप्र**, **द्वार**, **अट्टालक**, **महापथ**, **प्रसाद**, **कोष्ठागार**, **सभा**, **वीथी**, **जलाशय** आदि वास्तु के अनेक स्थल प्राप्त हुए हैं।
- कोट के भीतर **नगर चौड़े महापथों से विभक्त** था जो चतुष्पथों के रूप में एक दूसरे से मिलते थे और फिर उनसे **कम चौड़ी रथ्याओं और वीथियों में बँट** जाते थे और समस्त पुर को कई **चौक** या **मुहल्लों** में **बाँटते** थे।
- पुरनिर्माण के आरम्भ में **वास्तु-विद्याचार्यों** ने उसका जैसा **विन्यास** किया था वह लगभग उसी रूप में एक **सहस्त्र वर्षों के अन्त तक** बना रहा।

रास्ते

- नगर का **मुख्य राजमार्ग 33 फीट चौड़ा** है।
- उस पर कई **गाड़ियाँ एक साथ** चल सकती हैं।
- **कम चौड़ी सड़के** 12 फीट से 9 फीट तक हैं। इसके बाद **4 फुट तक चौड़ी गलियाँ** भी हैं।
- **सड़कों** पर **ईट बिछाकर** उन्हें **पक्की** करने का **रिवाज** नहीं था।
- केवल **बीच** में बहने वाली **नालियों** को **ईंटों** से **पक्की बनाकर** **ईटों** से ही **ढंकते** थे।

घर

घर प्रायः **एक सीध में** और **गलियों** की **ओर** बनाए जाते थे। उनकी **माप** प्राय: 27 फुट x 29 फुट या बड़ें घरों की इससे दुगुनी होती थी। उनमें कई **कमरे**, **रसोईघर**, **स्नानघर** और बीच में **आँगन** होता था और वे **दुखण्डे** बनाए जाते थे।

- कमरों में **फर्श पक्के** न थे, **केवल मिट्टी** कूटकर कच्चे रखे जाते थे।
- **स्नान** की **कोठरियों** में **पतली ईंटें** लगाकर फर्श में एकदम ऐसी जुड़ाई करते थे कि एक बूंद भी पानी न भरने पाये।
- मोटी दीवारों में **नल लगाकर नहाने धोने** का **पानी** नीचे उतार कर **सड़क की ओर** नालियों में बहा दिया जाता था। इससे होने वाली **स्वच्छता** जोकि **हड़प्पा संस्कृति** की **विशेषता** थी।
- प्रायः हर अच्छे घर में **मीठे पानी से भरा हुआ कुआँ** था।

कुएँ

- कुएँ के मुँह पर कुछ **ऊँची मुड़ेर** रहती थी जिसकी ऊपरी कोर पर रस्सी आने-जाने के निशान अभी तक बने हैं।
- वास्तुकाला की दृष्टि से **मोहनजोदड़ो** तथा **हड़प्पा** के **बड़े अन्नागार** भी **अद्भुद** है। पहले इसे **स्नानागार** का **ही एक भाग** माना जाता था।
- किन्तु **उत्खनन** के **पश्चात** यह ज्ञात हुआ है कि ये एक **विशाल अन्नागार** के **अवशेष** है।
- स्नानागार के निकट **पश्चिम** में **विद्यमान पक्की ईंटों** के विशाल चबूतरे पर **मोहनजोदड़ो** का **अन्नागार** निर्मित है, जिसकी पूर्व से पश्चिम की **लम्बाई 150 फीट** तथा उत्तर से दक्षिण की **चौड़ाई 75 फीट** है।

मंदिर वास्तुकला

- भारत में मंदिर वास्तुकला का विकास **गुप्त युग के दौरान चौथी** से **पांचवीं शताब्दी ईस्वी** में हुआ।
- पहले **हिंदू मंदिर शैल्कर्तित गुफाओं** से बनाए गए थे, जो **बौद्ध संरचनाओं** जैसे स्तूपों से **प्रभावित** थे।
- इस अवधि के दौरान, बड़े पैमाने पर **मुक्त खड़े मंदिरों का निर्माण** किया गया।
- **दशावतार** मंदिर (देवगढ़, झांसी) और **ईंट मंदिर** (भितरगांव, कानपुर) इस अवधि के दौरान बनाए गए मंदिरों के कुछ उदाहरण हैं।
- भारत में हिंदू मंदिरों के **स्थापत्य सिद्धांतों** का **वर्णन शिल्प शास्त्र में** किया गया है जिसमें तीन मुख्य प्रकार के मंदिर वास्तुकला का उल्लेख है - **नागर** शैली, **द्रविड़** शैली और **वेसर** या मिश्रित **शैली।**

हिंदू मंदिर की बुनियादी संरचना

- **गर्भगृह - मंदिर का हृदयस्थान**- मंदिर के अंदर मुख्य देवता के लिए बनाया गया है। पहले के दिनों में, इसका एक ही प्रवेश द्वार था जिसमे बाद में कई कक्षों विकसित हुए।
- **मंडप**- यह **मंदिर का प्रवेश द्वार** है जो बहुत बड़ा होता है जिसमें **बड़ी संख्या** में **उपासकों** के लिए **जगह** शामिल है। कुछ मंदिरों में **अर्धमंडप** (मंदिर के बाहर और एक मंडप के बीच एक संक्रमणकालीन क्षेत्र बनाने वाला प्रवेश द्वार) और **महामंडप** (मंदिर में मुख्य सभा हॉल जहां भक्त समारोहों और सामूहिक प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते हैं) नामक **विभिन्न आकारों** में कई **मंडप** होते हैं। ये **कुछ** ही **मंदिरों** में **मौजूद** हैं।
- **शिखर/विमान** - यह एक **पर्वत जैसा शिखर** है, जो **उत्तर भारत** में एक **घुमावदार शिखर** और **दक्षिण भारत** में एक **पिरामिडनुमा मीनार** (जिसे विमान कहा जाता है) के **आकार** में है।
- **वाहन**- यह मंदिर के **मुख्य देवता का वाहन** है जिसे **गर्भगृह से पहले** रखा जाता है।
- **अमलक**- पत्थर की एक **डिस्क जैसी** संरचना जो **उत्तर भारतीय शैली** के **शिखर** के **शीर्ष पर** स्थित है।
- **कलश**- **चौड़े मुंह वाला बर्तन** या सजावटी बर्तन-डिजाइन **उत्तर भारतीय मंदिरों में** शिखर को सजाते हैं।
- **अंतराल**- गर्भगृह और मंदिर के मुख्य हॉल (मंडप) के बीच एक **संक्रमण क्षेत्र**
- **जगती**- **बैठने** और **प्रार्थना** करने के लिए एक **ऊंचा मंच** और **उत्तर भारतीय मंदिरों** में **आम** है।

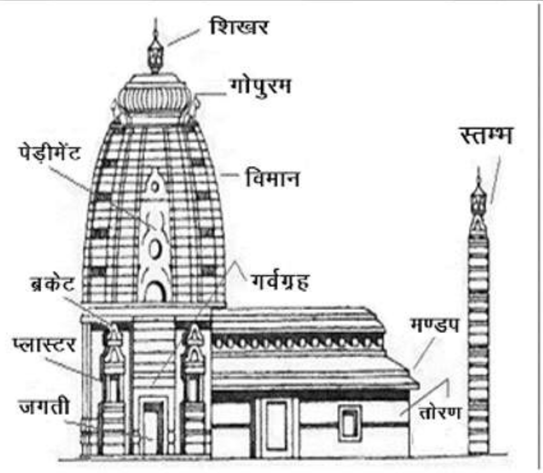

मंदिर स्थापत्य में भग्न ज्यामिति का प्रयोग

- एक योजना की **ज्यामिति एक रेखा से शुरू** होती है जो फिर एक **कोण** बनाती है, फिर **त्रिभुज**, **वर्ग**, **वृत्त** और इसी तरह अंततः **जटिल रूपों** में **परिणत** होती है।
- इस जटिलता का परिणाम **स्व-समानता** होता है ।
- हिंदू मंदिर की योजना **वास्तुपुरुषमंडल** से संबंधित **पुराणों** में **वर्णित सिद्धांतों** का कड़ाई से **पालन** करती है।
- मुख्य रूप से **दो प्रकार के मंडल** होते हैं, एक **चौंसठ वर्गों वाला** होता है और दूसरा **इक्यासी वर्गों वाला** होता है जहाँ प्रत्येक वर्ग **एक देवता को समर्पित** होता है।
- **मुखमंडप**, **अर्धमंडप** और अंत में **महा मंडप** से शुरू होकर, **मूलप्रसाद** आता है, जो **गर्भगृह** को **घेरता** है।
- भग्न का भी **दो आयामों** और **तीन आयामों** दोनों में **मंदिर की ऊंचाई पर** बहुत **प्रभाव** पड़ता है।
- **फ्रैक्टल स्व-समान पसलियों** को बनाकर **अमलाका भाग** में **काम** करता है।
- **भग्न सिद्धांत** "सब के बीच एक, सब एक है" की **हिंदू दार्शनिक अवधारणा** का पूरी तरह से समर्थन करता है। यह "**अराजकता में व्यवस्था**" लाता है और इस प्रकार "**जटिलता में सुंदरता**" लाता है।

  गुजरात के **मोढेरा** में **सूर्य कुंड** भारतीय मंदिरों में **भग्न ज्यामिति** के उपयोग का एक **उत्कृष्ट** उदाहरण है।

मंदिर वास्तुकला के चरण

पहला चरण-

- **चपटी छत** वाला चौकोर आकार का मंदिर
- **उथले स्तंभ** पर निर्मित
- संरचना को **कम ऊंचाई के मंच** पर बनाया गया था
- **गर्भगृह** मंदिर के **केंद्र में** स्थित होता था
- मंदिर का **एक** ही **प्रवेश द्वार**

- **उदाहरण**- एमपी के एरण में विष्णु वराह मंदिर, कंकली मंदिर, तिगवा और मंदिर नं। सांची में 17.

दूसरा चरण-

- **पूर्व चरण** की ही **विशेषताएं**
- **मंच / वेदी** और अधिक **ऊंची**
- **उदाहरण**- नचना कुठार का पार्वती मंदिर

तीसरा चरण-

- सपाट छतों के स्थान पर **शिखर** (घुमावदार टॉवर) **का उद्भव** हुआ।
- "**नागर शैली**" **मंदिर निर्माण** को मंदिर निर्माण के तीसरे चरण की **सफलता** कहा जाता है।
- **पंचायतन शैली** का आरम्भ
  उदहारण: देवगढ का दशावतार मंदिर, ऐहोल का दुर्गा मंदिर

चौथा चरण-

- **तीसरे चरण** की सभी **विशेषताओं** को इस चरण में **आगे बढ़ाया** गया।
- केवल **मुख्य मंदिर** आकार में अधिक **आयताकार** हो गया।
- **उदाहरण**: महाराष्ट्र तेर मंदिर

पांचवा चरण

- बाहर की ओर **उथले आयात्कार किनारों वाले वृत्ताकार मंदिरों** का निर्माण
- **पहले** के **चरणों** की सभी **विशेषताएं** जारी रही
  उदाहरण:राजगीर का मनियार मठ

मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ

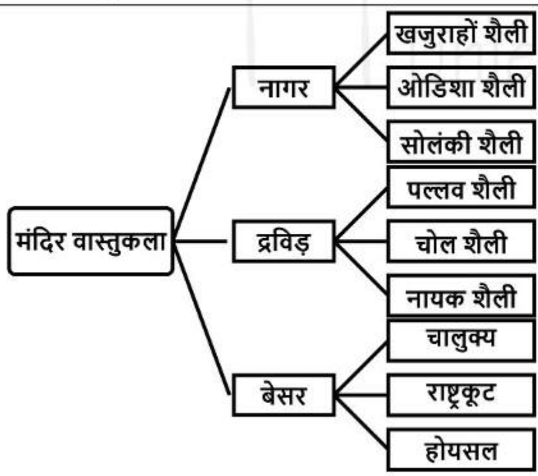

उदभव एवं विकास (100 BC - 1700 / 1800 AD)

नागर शैली	मोर्योत्तर काल (100 ईसा पूर्व - 300 ईसवी) → गुप्तकाल (319-550 ईसवी) → पूर्वमध्यकाल (700-1200 ईसवी)
द्रविण शैली	पल्लव (7 -9वी सदी) → चोल (9-13वी सदी) → विजयनगर (14-16 वी सदी) → नायक (14-18वी सदी)
बेसर शैली	पशिमी चालुक्य (7 -9 वी सदी) → राष्ट्रकट (10-12वी सदी) → होयसल (13-14 सदी)

1. मंदिरों की नागर शैली

- उत्तर भारत में **हिमालय से विध्य के मध्य** नागर मंदिर मिलते है
- नागर मंदिरों का **निर्माण ऊचे चबूतरे** या **अधिष्ठान** या **जगती** पर किया जाता है।
- इन मंदिरो का **गर्भगृह वर्गाकार** होता है
- **गर्भगृह** के उपर बनी **आकृति शिखर रेखा** या **आर्य शिखर** कहलाती है।
- शिखर को गर्भगृह से उपर की तरफ **वक्राकार** ढंग से बनाया गया है। तथा इसकी **ऊचाई बढ़ती** जाती है।
- इसके लिए **गर्भगृह से चारो तरफ प्रक्षेपण आकृति** निकाले जाते है।

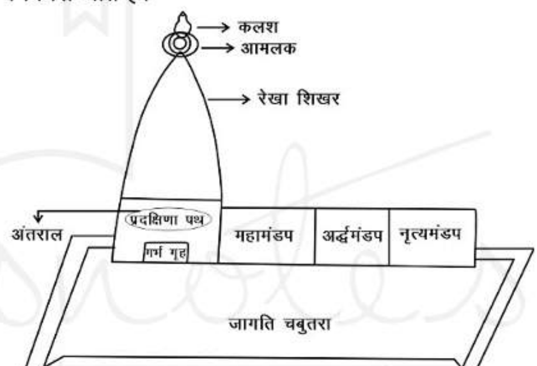

- शिखर के **सर्वोच्च भाग** पर **आमलक** (चक्राकार संस्चना या गतिका परिचायक) एव **कलश** बना होता है।
- गर्भगृह के **चारों तरफ अंतराल** होता है जिसका प्रयोग **प्रदक्षिणा पथ** के रूप में किया जाता है।
- बड़े नागर मंदिरों में गर्भगृह के सामने अन्य **सहायक संरचनाएँ** जैसे- महामण्डप, मण्डप, मधमप, नृत्यगंडप आदि वने होते है।
- कुछ स्थानों पर नागर मंदिर **पंचायतन शैली में बने** होते है जिसके तहत **केद्र** में एक **विशाल मंदिर** तथा **चारो कोनों** पर **सहायक देवी देवताओ के मंदिर** बनाए जाते हैं।
- नागर मंदिरों के **बाहरी भागों** में **आले** (ताखा) **काटकर** अनेक प्रकार की **मूर्तियों** से इन्हें **सजाया** जाता है। इन मूर्तियों में अनेक **देवी देवताओं**, लोकविषयों से संबंधित जैसे **नाग अप्सरा**, **मिथुन**, नृत्य संगीत आदि आम स्त्री पुरुष की **मूर्तिया** बनी होती है। जिन्हें **उत्तर प्रदेश** के देवगढ़, **कंडरिया महादेव**, **खजुराहों**, **भुवनेश्वर** आदि मंदिरों में देखा जा सकता है।

- **शिखरों की आकृति के आधार पर** नागर मंदिरों को वर्गीकृत किया जा सकता है-
    - **लैटिना/ रेखाप्रसाद**
        - इसका वर्गाकार आधार होता है।
        - यह **सबसे सरल और सबसे सामान्य प्रकार** है।
        - **ज्यादातर गर्भगृह के लिए इस्तेमाल** किया जाता है।
    - **फमसाना**
        - इसका एक **व्यापक आधार** होता है।
        - लैटिना की तुलना में **ऊंचाई में कम ।**
        - ज्यादातर **मंडप के लिए उपयोग** किया जाता है।
    - **वल्लभी**
        - इसका एक **आयताकार आधार** है
        - छत जो एक **गुंबददार प्रकोष्ट** का निर्माण करती है।
        - **अर्धगोलाकार छतो** के रूप में जाना जाता है।
- **कुछ प्रमुख उदारण**
    - दशावतार मंदिर - देवगढ़ (UP)- विष्णु
    - कंदरिया महादेव - खजुराहो (MP)- शिव
    - लक्ष्मण मंदिर - खजुराहों 'विष्णु
    - लिंगराज मंदिर - भुवनेश्वर -शिव
    - अरसावली मंदिर – आंद्रप्रदेश - सूर्य

नागर शैली के अंतर्गत 3 उपशैलियाँ:

A. ओडिशा शैली

- मंदिर **शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व** करते हैं।
- ओडिशा में **कलिंग साम्राज्य** के समय में नागर शैली के अन्तर्गत ही ओडिशा मंदिर स्थापत्य शैली का विकास हुआ, जिसमें अनेक **विशेषताएँ** देखने को मिलती हैं, जैसे-
    - मंदिर की **बाहरी दीवारों** पर **बारीक नक्काशी** की जाती थी जबकि **भीतरी दीवारें बिना** किसी **नक्काशी** के खाली छोड़ दी जाती थीं।
    - **मंदिर की छत को लोहे के गार्डरों से सहारा** दिया जाता था।
    - **शिखर - रेखा-देउल** जो क्षैतिज आकार में होने के बाद शीर्ष पर एकदम से अन्दर की तरफ मुड़े थे।
    - ये मंदिर द्रविड़ शैली के समान ही **परकोटे से घिरे** थे।
    - **मंदिर के मंडप** को **जगमोहन** कहा जाता था।

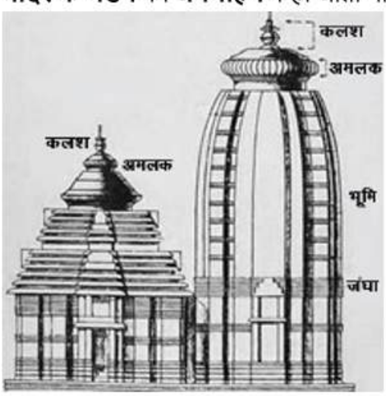

B. खजुराहो शैली

- **मंदिरों** में एक **गर्भगृह**
- एक **छोटा आंतरिक-कक्ष** (अंतराल), एक **अनुप्रस्थ** भाग **(महामण्डप)**
- अतिरिक्त **सभागृह** (अर्ध मंडप)
- एक **मंडप** या बीच का भाग
- एक **बड़ी खिड़कियों** वाला चल मार्ग **(प्रदक्षिणा-पथ)**।
- मंदिरों की **नक्काशी** मुख्य रूप से **हिंदू देवताओं** और **पौराणिक कथाओं** के **संबंध** में है।
- स्थापत्य शैली भी **हिंदू परंपराओं** के **अनुसार** है। इनकी **विभिन्न कारकों** द्वारा **पुष्टि** कि जा सकती है।
- हिंदू मंदिर के निर्माण की एक **प्रमुख विशेषता** यह है कि **मंदिर** का **मुख सूर्योदय** की दिशा की ओर होना चाहिए।
- इसके अलावा, इनकी **नक्काशी** हिंदू धर्म में जीवन के **चार लक्ष्यों** अर्थात, धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष को दर्शाती है।
- **मूर्तियों** और **कामुक चित्रों** का समूह **दैनिक जीवन** के **दृश्यों** को **प्रतिनिधित्व** करता है।

C. सोलंकी शैली

- **गुजरात** और **राजस्थान** में निर्मित
- इसके तहत **हिन्दू मंदिरों** के साथ-साथ **जैन मंदिरों** का भी **निर्माण** हुआ।
- **अर्द्ध-गोलाकार पीठ** और **'मंडोवार' गुजरात उपशैली** की पहचान विशेषता हैं।
- वह **अर्द्ध-गोलाकार संरचना** जिसकी वजह से छत-शिखर अलग-अलग दिखता है, उसे **मंडोवार** कहते हैं।
- **उदाहरण:** माउंट आबू का आदिनाथ मंदिर, तेजपाल मंदिर, पालिताना के सैकड़ों मंदिर, सोमनाथ मंदिर, मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर आदि इस शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।
- माउंट आबू पर बने कई मंदिरों में **संगमरमर** के **दो मंदिर** हैं- **दिलवाड़ा** का **जैन** मंदिर तथा **तेजपाल मंदिर** (अर्बुदगिरी के बगल में)।
- कुंभरिया के **पार्श्वनाथ मंदिर** में भी राजस्थान के **मकरान** से **उपलब्ध** काले और सपेद **संगमरमर** का इस्तेमाल किया गया है।

- माउंट आबू के **मंदिरों** का **निर्माण** सोलंकी शासक **भीम सिंह प्रथम** के मंत्री **दंडनायक विमल** ने करवाया था, इसी कारण इसे विमलबसाही मंदिर भी कहते हैं।
- सोमनाथ मंदिर को सोलंकी शासकों की देन न मानकर **गुर्जर-प्रतिहारों** की **देन** माना जाता है।

2. मंदिरों की द्रविड शैली

- विकास - **कृष्णा नदी से कन्याकुमारी** के बीच वर्तमान तमिलनाडु, केरल, निचला आंध्र प्रदेश आदि के मध्य हुआ है।
- द्रविड़ मंदिरों मे **ऊचा चबूतरा नहीं** होता है। यह **मंदिर धरातल** के **निचले हिस्से** से बनना **प्रारंभ** होता है।
- द्रविड़ मंदिरों का **गर्भगृह वर्गाकार** एवं इसके उपर का **शिखर पिरामिडाकार** होता है जो तल्ले के ऊपर तल्ला घटते क्रम में मे बना होता है।
- इसके **ऊचे उठते भाग** को **विमान** कहा जाता है, **शिखर** के **सर्वोच्च भाग** पर **स्तूपिका** नामक **संरचना** बनी होती है।
- गर्भगृह के **चारो ओर अन्तराल** बना होता है जितका **प्रयोग दक्षिणा पथ** के लिए किया जाता है।
- **गर्भगृह** के सामने **बहुसंख्यक स्तंभों** पर टिका **महामण्डप** बना होता है। साथ ही **अन्य सहायक रचनाए** जैसे- अधिमंड़प एवं नदीमण्डप आदि बने होते है।
- **द्रविण मंदिर चारदीवारी** के **भीतर** बने होते है। **मंदिर प्रांगण** में **तालाब** बना होता है। प्रांगण के **भीतर सहायक मंदिर** (देवी-देवता एवं राजा रानियों) के भी बने होते है।
- द्रविण मंदिरों का **प्रवेश द्वार** काफी **भव्य** एवं **विशाल** होता है। जिसे **गोपुरम** कहा जाता है।
- मंदिरों के बाहरी भागो पर **मण्डपो** से लेकर **शिखर** तक **देवी-देवताओं की मूर्तियों** एवं **लोक विषयों** से सम्बंधित **मूर्तियों** का **अरभूत शिल्पांकन** किया जाता है। **मंदिर-** वृहदेश्वर एवं मिनाक्षी मंदिर।

नागर एवं द्रविण शैली के मंदिरों में अन्तर

नागर शैली	द्रविड़ शैली
• **रेखीय शिखर** होता है • शिखर के **सर्वोच्च भाग पर आमलक** तथा **कलश** जैसी संरचना होती है • सामान्यतः **ऊचा चबूतरा** बना होता है। • चारदिवारी तथा प्रांगण के भीतर **तालाब निर्माण आवश्यक नहीं** है।	• **पिरामिडाकार शिखर** होता है • सर्वोच्च भाग पर **स्तूपिका** वनी होती है • **ऊचा चबूतरा आवश्यक नहीं** होता है, मंदिर सामान्यतः धरातल से ही बनने प्रारम्भ हो जाते है। • **चारदिवारी का निर्माण** तथा **प्रांगन में तलाब** यहां की मुख्य विशेषता है
• **भव्य प्रवेश द्वार** सामान्यतः **नही** बने होते है। ○ वास्तुशास्त्र की भाषा में इन्हें **प्रसाद** कहा जाता है।	• **भव्य प्रवेशद्वार** होते है जिसमे **गोपुरम** यहाँ की विशेष परम्परा है। ○ इन्हें **वास्तुशास्त्र में विमान** कहा जाता है।

A. <u>पल्लवों की मंदिर वास्तुकला</u>

- **मंदिरों के प्रत्यक्ष संरक्षण** की परंपरा पल्लवों के साथ शुरू हुई।
- पल्लव राजा **महेंद्रवर्मन प्रथम** के शासनकाल से, तमिलनाडु में पल्लव कला के **बेहतरीन उदाहरण** जैसे शोर मंदिर और महाबलीपुरम के 7 पैगोडा बनाए गए थे।
- महिषासुरमर्दिनी, गिरि गोवर्धन पैनल, गजलक्ष्मी और अनातसायनम कुछ **शानदार मूर्तियां** हैं जिनका संरक्षण किया गया है।
- पल्लव वास्तुकला **शैलकृत मंदिरों से लेकर शैल निर्मित मंदिरों** तक के संक्रमण को दर्शाती है।

(i) <u>महेंद्र समूह या महेंद्रवर्मन शैली</u>

- ○ यह **सबसे प्रारंभिक** शैली थी जिसे मंडप कहा जाता है
- ○ इसके तहत **पहाडी को सामने की तरफ से काटकर** पिछले भाग में **साधारण कक्ष** (गर्भगृह) एवं **बरामदा** का **निर्माण** किया गया
- ○ **गर्भगृह** के **प्रवेश द्वार** पर **द्वारपालों** की **मूर्तिया** तया अनेक **स्तम्भ** बनाए गए।
- ○ उसके तहत **कई मंडपों का निर्माण** किया गया जिसमें **त्रिमूर्ति मंडप**, **पंच पांडव मंडप** (पल्लवरम) तथा **महेन्द्र विष्णु मंडप** आदि मुख्य है।

(ii) <u>नरसिंहवर्मन प्रथम / मामल्ल शैली (मण्डप + रथ) / नरसिंह समूह</u>

- ○ यह भी **शैलकृत मंदिरों की शैली** है।
- ○ इसके तहत **मन्डपो के साथ रथों का निर्माण** किया गया।
- ○ **मण्डप**
  - ▪ कनेरी मंडप
  - ▪ आदिवराह मंडप
  - ▪ पंचपांडव मण्डप
- ○ **प्रमुख विशेषताएँ**
  - ▪ उस काल में **रथों का निर्माण पहाड़ी को ऊपर से नीचे की तरफ काटकर** किया गया है।
  - ▪ ये **रथों के अनुकरण मे** बने है।
  - ▪ इन पर **बोद्ध चैत्यो एवं विहारों का भी प्रभाव** है।

- सभी रथ **एक समान नहीं** है बल्कि ये कई मंजिलों में बने हुए है
- रथों के **सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका** बनी होती है।
- **सभी रथ मंदिर महाबलीपुरम** में बने हैं।
- इनकी संख्या सात है इन्हें **सप्त पैगोडा** भी कहते है।
  1. युधिष्ठीर रथ (सबसे बड़ा)
  2. भीमरथ
  3. अर्जुन रख
  4. नकुल/ सहदेव रथ
  5. द्रोपती रथ
  6. गणेश रथ
  7. पिंडारी या वलयकुडी रथ
- रथ केवल स्थापत्य के ही उदारण नहीं है बल्कि ये **शिल्प कला के भी उत्तम प्रदर्शन** है।
- इनके बाहरी भागों पर **रामायण, महाभारत** तथा **पौराणिक कथाओं** जैसे अर्जुन की तपस्या, शिव की किरात, राम का वनवास आदि का उल्लेख है

(iii) नरसिंह वर्मन द्वितीय / राजसिंह शैली

- इस काल में पल्लवों ने **शैलकृत तकनीकी का परित्याग** कर दिया ।
- यहाँ से **संरचनात्मक मंदिर** बनाये जाने लगे।
- जिनका **निर्माण खुले धरातल पर** ईटों एवं पत्थरो पर किया गया।
- राजसिंह शैली की संरचनात्मक मंदिरों की **विशेषताएं** निम्न है
  - वर्गाकार गर्भगृह
  - गर्भगृह के उपर पिरामिडाकार शिखर
  - सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका
  - गर्भ गृह के चारो तरफ अन्तराल
  - सामने की तरफ मंडपों का निर्माण
  - मंदिरो के चारो तरफ चहारदिवारी एवं प्रवेश द्वार पर गोपुरम का निर्माण
  - इसके तहत महाबलिपुरम काशोर मंदिर (शिव),कांची का कैलाशनाथ मंदिर एवं बैकुण्ठपेरुमाल मंदिर

(iv) नंदीवर्मन शैली

- राजसिंह शैली की भाँति यह भी **मंदिरों की संरचनात्मक शैली** है।
- जिसकी **विशेषताएं राजसिंह शैली की भांति** है।
- इसके तहत **कांची का मुक्तेश्वर मंदिर** तथा **गुडीमंगलम का परशुरामेश्वर मंदिर** आदि आते है।

B. चोल मंदिर (9-13 वी सदी)

- **पल्लवो को पराजित कर** सत्ता में आए।
- चोलो ने पल्लवों द्वारा प्रारम्भ **द्रविण शैली** को **जारी** रखा और उसे **उचाइयो पर पहुचाया** –
- चोलो के काल में **अत्यंत भव्य** एवं **विशाल मंदिर** बने ।
- मंदिरों के साथ **अत्यंत कलात्मक** एवं **खूबसूरत मूर्तियों** का **निर्माण** हुआ तथा कुछ की **दिवारों पर चित्रण** भी किया गया।
- **चोल मंदिरों की विशेषताएं**
  - **वर्गाकार गर्भ गृह**, घटते क्रम में **पिरामिडाकार शिखर।**
  - सर्वोच्च भाग पर **स्तूपिका**, गर्भ गृह के चारो ओर **अन्तराल**, गर्भगृह के सामने **महामंडप**, **अर्धमंडप** तथा **नदी मंडप** जैसी संरचनाओं का **निर्माण** हुआ है
  - **चारदीवारी प्रांगण** में तालाब एवं सहायक मंदिर, देवी-देवता एवं राजारानी के मंदिर।
  - दो **दो भव्य गोपुरम** का निर्माण हुआ है
  - **प्रमुख मंदिर** में नतमलई मंदिर, तंजौर का वृहदेश्वर, गगईकोडचोलपुरम का मंदिर, एरावतेश्वर एवं कपहरेश्वर मंदिर आदि मुख्य मंदिर है
- **चोल मंदिरों के विशेष लक्षण –**
  - चोल मंदिरों का **निर्माण ग्रेनाईट के बड़े-बड़े पत्थरों से** किया गया है, ये अपनी **भव्यता** एवं **विशालता** के लिए जाने जाते है।
  - जैसे **तंजोर के वृहदेश्वर मंदिर** की ऊचाई 190 फिट है, इसमे कुल 13 तल्ले बने है।
  - **शिखर के सर्वोच्च भाग** पर **34 टन वजन** का एक **विशालकाय स्तूपिका** बनी है।
  - चोल मंदिर **वास्तु** के साथ-साथ **मूर्तिकला एवं चित्रकला के उत्तम उदाहरण** है।
  - मंदिरो के बाहरी भागों पर **दीवारों**, **स्तंभों** आदि पर रामायण, महाभारत तथा पौराणिक कथाओं के अनेक देवी देवताओं की खूबसूरत एवं कलात्मक **प्रतिमाए** बनायीं गयी।
  - **ब्रिहदेश्वर** जैसे मंदिर में देवी-देवताओं के **पौराणिक कथा** के **चित्र** दीवारों पर बने है।
  - चोल मंदिरों की **विशालता**, **भव्यता** एवं **साज सज्जा** इतनी आकर्षित करती है कि फर्ग्युसन ने कहा है कि "चोलों ने दैत्यों की तरह सोचा तथा जोंहरीयों की तरह पूरा किया।"

C. नायक शैली के मंदिर

- **1565** में **विजयनगर साम्राज्य** का **पतन** हुआ
- **स्थानीय सामन्तों** का **उदय** हुआ जिन्हें **नायक** कहा गया
- मंदिरों की **द्रविड शैली** को **सर्वोच्च स्तर** प्रदान किया।

- **बहुसंख्यक मंदिरों** का **निर्माण** कराया गया
- **विशेषताएं**
    - सभी **द्रविड विशेषताएँ** जैसे, वर्गाकार गर्भगृह, पिरामिडाकार शिखर, स्तूपिका अन्तराल, बहुसंख्यक कक्ष/मंडप
    - नायकों के तहत **भारी संख्या में गोपुरम्** का **निर्माण** कराया गया
    - मंदिरों की **साज सज्जा** एवं **अलंकरण** काफी खूबसूरत है। जिसका प्रमुख **उदारण** रामेश्वरम् का गलियारा है।
    - ऐसा लगता है कि यहाँ आते आते **द्रविड़ वास्तुकला** ने अपना **सर्वोच्च स्तर** पाप्त कर लिया हो।
    - नायक मंदिर **स्थापत्य मूर्ति** एवं **चित्रकला** के **अद्भुद संगम** है **।**
    - बाहरी दिवारो पर **गोपुरम** के बाहरी **भागो स्तंभों** आदि पर **अत्यन्त कलात्मक ढंग** से अनेक **देवी-देवताओं की मूर्तिया** बनायी गयी है,
    - **मदुरै के मीनाक्षी मंदिर** में अत्यंत **खूबसूरत चित्रण** भी किया गया है।

3. बेसर शैली के मंदिर

- **बेसर मंदिरों का निर्माण** मुख्यतः **विंध्य पर्वतमाला** से **कृष्णा घाटी** के बीच (वर्तमान महाराष्ट्र एवं कर्नाटक) हुआ।
- वेसर मंदिरों का **विकास मुख्यतः 7 वी से 13वीं सदी के बीच** पश्चिमी **चालुक्यों**, **राष्ट्रकूटो** तथा **होयसल** शासकों के द्वारा कराया गया।
- वेसर शैली **मौलिक शैली नहीं** है बल्कि यह **नागर एवं द्रविण शैली का मिश्रण** है।
- बेसर **मंदिरों** की **धरातल** योजना एवं **आकार द्रविण मंदिरो जैसे** होते है। इसका **शिखर ढोलाकार** या पीपानुमा होता है। **गर्भगृह**, **मण्डप** एवं **सर्वोच्च भाग** पर **स्तूपिका** आदि द्रविण मंदिरों जैसे बने होते है।
- लेकिन **अलंकरण** एवं **सजावट** नागर **मंदिरों जैसा** होता है ।
- आधिकांश **वेसर मदिरों** का **गर्भगृह वर्गाकार** होता है। लेकिन उसके **अपवाद** भी मिलते है जैसे होयसल शासकों के तहत बने **मंदिर का गर्भगृह बहुकोणीय** या **तारा आकृति** में बना होता है
- **बेसर शैली के मंदिर**
    - चालुक्यों द्वारा **मुख्यतः तीन केंद्र** पर **बहुसंख्यक मंदिरों** का निर्माण किया गया
        - एहोल
        - बादामी
        - पदाक्कल

A. चालुक्यों की मंदिर वास्तुकला

- बादामी चालुक्य काल के दौरान **6वीं और 8वीं शताब्दी** के **बीच** की अवधि में विकसित
- इसे "**चालुक्य वास्तुकला**" या "**कर्नाटक द्रविड़ वास्तुकला**" कहा जाता था।
- **लाल-सुनहरा बलुआ पत्थर** इन मंदिरों की **प्रमुख निर्माण सामग्री** थी।
- उनके द्वारा निर्मित गुफा मंदिरों में **धार्मिक** और **धर्मनिरपेक्ष** दोनों **विषयों** को **दर्शाया** गया है।
- मंदिरों में **खूबसूरत भित्ति चित्र** भी थे।
- **मंजिलों** की **ऊंचाई कम** थी और **मंजिलों को** आधार से ऊपर की ऊंचाई के **अवरोही क्रम** में व्यवस्थित किया गया था और प्रत्येक मंजिल में **अत्यधिक अलंकरण** था।
- **प्रारंभिक चालुक्य** मंदिरों में शैलकृत गुफाएं बनाई गयी है जबकि बाद में संरचनात्मक मंदिरों का निर्माण हुआ है।
- चालुक्य आकृतियाँ उनके **पतले शरीर, सुंदर लंबे, अंडाकार चेहरों** की वजह से विशिष्ट हैं; वे **समकालीन पश्चिमी दक्कन** या **वकटक शैलियों** से **भिन्न** हैं।
- **उदाहरण**- बादामी के चालुक्यों का **सबसे प्राचीन स्मारक** एहोल में **रावण फाड़ी गुफा** है, जो बादामी से ज्यादा दूर नहीं है।
    - यह संभवत: **550 ईस्वी के आसपास बनाया** गया था और यह **शिव** को **समर्पित** है।
    - सबसे उल्लेखनीय मूर्तियों में से एक **नटराज** की है, जो सप्तमातृकाओं के बड़े-से-बड़े आकार के चित्रणों से घिरी हुई है: तीन शिव के बाईं ओर और चार उनके दाईं ओर।
- **बादामी गुफा मंदिर** बादामी में स्थित हैं।
    - **लाल बलुआ पत्थर** से बनी इन गुफाओं में **तीन ब्राह्मणवादी** और **एक जैन** (पार्श्वनाथ) और **एक** प्राकृतिक **बौद्ध** गुफा है।
    - मुख्य रूप से बादामी के गुफा मंदिरों में **विष्णु की उत्कृष्ट मूर्तियां** हैं।
- बादामी के चालुक्यों का **सबसे बड़ा मंदिर पत्तदकल** में **विरुपाक्ष मंदिर** है, जिसके परिसर में **30 उप मंदिर** और एक **बड़ा नाडी मंडपम** है।
    - यह मंदिर **यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल** है।

पत्तदकल मंदिर परिसर - यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

- मंदिर परिसर में **10 मंदिर** हैं- उनमें से **चार नागर शैली** के हैं और बाकी **छह द्रविड़ शैली** की विशेषताएं दिखाते हैं।
- पट्टाडकल में **विरुपाक्ष मंदिर**, यहां का **सबसे बड़ा** मंदिर है। इसके परिसर में 3**0 उप मंदिर और एक बड़ा नाडी मंडपम** है।
    - यह **शिव मंदिरों का सबसे पहला उदाहरण** था, जिसमें मंदिर के सामने एक **नंदी मंडप** है।

B. राष्ट्रकूट शैली के मंदिर

- **चालुक्यों को पराजित कर सत्ता में** आये
- इन्होने **वेसर शैली मे अनेक मंदिरो का निर्माण** करवाया।
- **प्रमुख मंदिर**
  - एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर
  - एलोरा स्थित एकाश्म जैन मंदिर
  - विश्वनाथ मंदिर (पदाक्कल)
  - नरायण मदिर (पदाक्कल)
- एलोरा की गुफाये **महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित** है। एलोरा कलाओं का संगम है जहां **वास्तुकला**, **मूर्तिकला** एवं **चित्रकला** तीनो का **अद्भुद समागम** दिखाई देता है
- यहाँ **ब्राह्मण**, **जैन**, **बोद्ध** धर्मो से सम्बंधित अनेक **कलाकृतियाँ** पाई जाती है।
- **विशेषताएं**
  - एलोरा का **कैलाशनाथ मंदिर** राष्ट्रकूट शासक **कृष्ण-1 द्वारा निर्मित** कराया गया।
  - कैलाशनाथ मंदिर **शैलकृत वास्तु का अद्भुद उदाहरण** है
  - इसे एक **पहाडी** को ऊपर से **काटकर** इसका **निर्माण** किया गया है।
  - इसका **क्षेत्रफल 276*154 फुट** है।
  - मंदिर के तहत एक **गर्भगृह** (भगवान शिव को समर्पित)तथा कई **मंडपो** (कक्ष) का **निर्माण** किया गया है। इसका **प्रवेशद्वार पश्चिम दिशा** की **ओर** है **।**
  - एलोरा **कैलाशनाथ मंदिर** स्थापत्य कला एवं अभियांत्रकी का **श्रेष्ठ उदारण** है
  - कैलाशनाथ मंदिर की वास्तु संरचना के साथ इसका **शिल्पांकन** भी **काफी अद्भुद** है।
  - मंदिर में **पौराणिक कथाओं** के विषयों के अनेक **खूबसूरत प्रतिमामों** का **निर्माण** किया गया है**।**
  - रावण द्वारा **कैलाश पर्वत** उठाने, विष्णु के **नरसिंह अवतार**, **शिव-पार्वती विवाह**, शिव का **वैभव रूप**, शिव का **तांडव नृत्य**, आदि **अद्भूत** है।
  - यहा **अनेक धर्म निरपेक्ष मूर्तियाँ** भी बनी है। पहाड़ी को काटकर **हाथियों के झुण्ड की मूर्तियां** बनी है जो काफी **कलात्मक** है।
  - एलोरा की **वास्तुगत** एवं **शिल्पगत विशेषताओं** को देखकर कहा जा सकता है कि यह भारत मे विकसीत **शैलकृत वास्तुकला** का **सर्वोत्कृष्ट उदाहरण** है इसके पूर्व **चैत्य** ,**विहार** एवं **मंदिर** भी पहाड़ी को **काटकर** बनाये गए थे |

C. होयसल मंदिर

- राष्ट्रकूटों के बाद दक्कन मे **होयसल शासकों का आगमन** हुआ। इसके द्वारा भी अनेक **मंदिरों** का **निर्माण** कराया गया।
- होयसल मंदिर भी **बेसर शैली** के **मंदिर** है। इनकी कुछ **विशेषताएं** भी है।जैसे
  - यहां के मंदिरों का **गर्भगृह ताराकृतिक/ बहुकोणीय** रूप में बना है।
  - **दो-दो गर्भगृह** भी बने है।
- होयसलेश्वर मंदिर (हेलविड कर्नाटक)।
- चेन्नाकेश्वर मंदिर (वेल्लूर कर्नाटक)
- पदाक्कल एवं मैसूर के मंदिर

D. विजयनगर मंदिर (14 -16 वी शताब्दी)

- विजयनगर साम्राज्य की **स्थापना**, **हरिहर और बुक्का** द्वारा 1336 में की
- **विशेषताएं**
  - **वर्गाकार गर्भगृह**, **पिरामिडाकार शिखर** एवं सर्वोच्च भाग पर **स्तूपिका**
  - गर्भगृह के चारो तरफ **अन्तराल**
  - विजयनगर के मंदिरो में **गर्भगृह के सामने अनेक मंडपों का निर्माण** किया गया। जैसे **महामंडप, कल्याणमंडप, यज्ञमंडप** (यहा बलि दी जाती थी) **अमन मंदिर** (सहायक मंदिर) आदि।
  - विजयनगर के **मंदिर अत्यन्त खूबसुरत एवं साज सज्जा युक्त** है।
  - मंदिरों के बाहरी भागों में स्तभों आदि पर **अत्यंत बारीक एवं खूबसूरत शिल्प** बनाए गए हैं। जिसमे उडते हुए **अश्व, कमलपुष्प** आदि के शिल्प काफी अनोखे है
  - विजयनगर के मंदिरो का **गोपुरम् पल्लवों एव चोलों से भी भव्य** है ।
  - **प्रमुख मंदिरो** में नल्लौर का विष्णु मंदिर, हम्पी के मंदिर, विट्ठल स्वामी मंदिर, हजारा, विरूपाक्ष आदि

E. मंदिर वास्तुकला के पाल और सेन स्कूल

- बंगाल क्षेत्र में वास्तुकला की शैली ।
- यह पाल वंश और सेन वंश के संरक्षण में **8 वीं और 12 वीं शताब्दी** मध्य की अवधि में विकसित हुआ।
- पाल वंश लोग मुख्य रूप से **महायान परंपरा के बौद्ध शासक** थे, लेकिन बहुत **सहिष्णु** थे और **दोनों धर्मों का संरक्षण** करते थे।
- पाल राजाओं ने बहुत से **विहार, चैत्य और स्तूप** बनवाए।
- सेन वंश के लोग **हिंदू** थे और उन्होंने **हिंदू देवताओं के मंदिरों का निर्माण** किया और **बौद्ध स्थापत्य** भी बनाए रखा।
- इस प्रकार वास्तुकला ने **दोनों धर्मों का प्रभाव** दर्शाया है।
- **विशेषताएं**:
  - इमारतों में एक **घुमावदार या ढलान वाली छत** थी, जैसे बांस की झोपड़ियों में होती है।

- यह लोकप्रिय रूप से **बंगला छत के** रूप में जाना जाता है और बाद में मु**गल वास्तुकारों द्वारा अपनाया गया** था।
- **जलीं हुई ईंट** और **मिट्टी** जिसे **टेराकोटा ईंटों** के रूप में जाना जाता है **प्रमुख निर्माण सामग्री** थी।
- इस क्षेत्र के मंदिरों का **शिखर लंबा गोलाकार** था, जिस पर **ओडिशा के स्कूल के समान एक बड़ा अमालक** रखा गया था।
- इस क्षेत्र की मूर्तियों में **पत्थर के साथ-साथ धातु का उपयोग** किया गया था।
- **पत्थर** इनका **प्रमुख घटक** था। यहाँ की मूर्तियाँ **अत्यधिक चमकदार** थी, जो कि इसे अद्वितीय बनाता है।
- **उदाहरण**: बराकर में सिद्धेश्वर महादेव मंदिर, विष्णुपुर के आसपास के मंदिर आदि।

भारत में सूर्य मंदिर

सूर्य मंदिर सूर्य देव सूर्य को समर्पित हैं। देश में कई सूर्य मंदिर हैं।

1. **<u>कोणार्क सूर्य मंदिर</u>**

- कोणार्क सूर्य मंदिर **पूर्वी ओडिशा के पवित्र शहर पुरी** के **पास** स्थित है।
- इसका **निर्माण राजा नरसिंहदेव प्रथम** द्वारा 13वीं शताब्दी (1238-1264 ई.) में किया गया था। यह गंग वंश के वैभव, स्थापत्य, मज़बूती और स्थिरता के साथ-साथ **ऐतिहासिक परिवेश का प्रतिनिधित्व** करता है।
- पूर्वी गंग राजवंश को **रूधि गंग** या **प्राच्य गंग** के नाम से भी जाना जाता है।
- मध्यकालीन युग में यह **विशाल भारतीय शाही राजवंश** था जिसने कलिंग से **5वीं शताब्दी की शुरुआत से 15वीं शताब्दी की शुरुआत तक शासन** किया था।
- पूर्वी गंग राजवंश बनने की शुरुआत तब हुई जब **इंद्रवर्मा प्रथम ने विष्णुकुंडिन राजा को हराया।**
- मंदिर को एक **विशाल रथ के आकार में बनाया गया** है।
- यह **सूर्य भगवान को समर्पित** है।
- कोणार्क मंदिर न केवल अपनी स्थापत्य की भव्यता के लिये बल्कि **मूर्तिकला कार्य की गहनता** और **प्रवीणता** के लिये भी जाना जाता है।
- यह **कलिंग वास्तुकला** की उपलब्धि का **सर्वोच्च बिंदु** है जो अनुग्रह, खुशी और जीवन की लय को दर्शाता है।
- 1984 में **यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल** ।
- कोणार्क सूर्य मंदिर के दोनों ओर **12 पहियों की दो पंक्तियाँ** हैं।
- **सात घोड़ों** को सप्ताह के **सातों दिनों का प्रतीक** माना जाता है।
- समुद्री यात्रा करने वाले लोग एक समय में इसे **'ब्लैक पगोडा'** कहते थे, क्योंकि ऐसा माना जाता था कि यह **जहाज़ों** को **किनारे** की ओर **आकर्षित** करता है और उनको **नष्ट** कर देता है।
- **कोणार्क 'सूर्य पंथ'** के प्रसार के इतिहास की **अमूल्य कड़ी** है, जिसका **उदय** 8वीं शताब्दी के दौरान **कश्मीर** में हुआ, अंततः **पूर्वी भारत के तटों पर** पहुँच गया।

2. **<u>मोढेरा सूर्य मंदिर, गुजरात</u>**

- सोलंकी राजवंश के **भीम प्रथम के शासनकाल के दौरान** 1026-27 ईसवी के बीच निर्मित।
- **यह मंदिर पुष्पावती नदी के तट पर स्थित है।**
- **सवर् मीटर का आयताकार कुंड (टैंक) शायद भारत का सबसे भव्य मंदिर तालाब है।**
- तालाब के अंदर की सीढ़ियों के बीच **108 लघु मंदिर** बनाए गए हैं।
- मंदिरों के **हॉल और स्तंभों को बड़े पैमाने पर उकेरा** गया है।

  एक विशाल सजावटी **मेहराबदार सभा मंडप** (विधानसभा हॉल) में **आगंतुकों का स्वागत** करता है, जो सभी तरफ से सुलभ है, जैसा कि उस समय पश्चिमी और मध्य भारतीय मंदिरों में प्रथा थी।

3. **<u>मार्तंड सूर्य मंदिर, कश्मीर</u>**

- **कर्कोट राजवंश** द्वारा निर्मित,
- सूर्य मंदिर का निर्माण **8 वीं शताब्दी ईस्वी** में कर्कोट राजवंश के तीसरे शासक **ललितादित्य मुक्तापीड** द्वारा किया गया था।
- मार्तंड का **संस्कृत** में **अर्थ** होता है सूर्य।
- संरचना का निर्माण **चूना पत्थर** से किया गया है, और पूरे परिसर को **अनंतनाग के पास एक पठार के ऊपर** बनाया गया है।
- भारत सरकार ने खंडहर हो चुके **मंदिर परिसर को पर्यटकों के लिए** खोल दिया है

  इस स्थल को **राष्ट्रीय, ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व का** माना जाता है और इसलिए यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अंतर्गत आता है।

4. **<u>दक्षिणार्क मंदिर, गया (बिहार)</u>**

- वारंगल के **राजा प्रतापरुद** ने **13वीं शताब्दी** में बनवाया था।
- **सूर्य भगवान की मूर्ती** के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पत्थर **ग्रेनाइट** से बना है
- देवता **फारसी पोशाक** जैसे जूते और एक जैकेट पहने हुए हैं।

5. **<u>सूर्यनारायण स्वामी मंदिर, अरासवल्ली (आंध्र प्रदेश) -</u>**

- यह कलिंग राजवंश के शासक **राजा देवेंद्र वर्मा द्वारा निर्मित** 7वीं शताब्दी ईस्वी का सूर्य मंदिर है।
- **निर्माण** इस तरह से किया जाता है कि सूर्य की किरणें **मार्च और सितंबर के दौरान शुरुआती घंटों** (सूर्योदय के समय) में (गर्भ गुड़ी में) **मूर्ति के पैरों पर** पड़ती हैं।
- विमान गोपुरम के अंदर की मूर्तियों को एक ही **काले पत्थर से उकेरा** गया है।

6. **<u>सूर्यनार कोविल, कुम्बकोणम (तमिलनाडु)-</u>**

- यह मंदिर तमिलनाडु के **नवग्रह मंदिरों में से एक** माना जाता है।
- 11वीं शताब्दी में **कुलोत्तुंग चोलदेव** (एडी 1060-1118) के शासनकाल के दौरान निर्मित; विजयनगर काल में और **दुसरे परिवर्तन** किये गये।

7. **<u>ब्राह्मण्य देव मंदिर, उन्नाव (मध्य प्रदेश)</u>**

- **दतिया के राजा** द्वारा प्रागैतिहासिक काल में **निर्मित।**
- मंदिर में **इक्कीस त्रिकोण की नक्काशी** है, जो सूर्य के **21 चरणों का प्रतिनिधित्व** करती है।
- मंदिर के नीचे **पहूज नदी बहती** है।
- **पहूज नदी** के पानी में पाया जाने वाला **सल्फर तत्व चर्म रोगों के उपचार में सहायक** होता है।

पहाड़ियों में मंदिर की वास्तुकला

- **कुमाऊं, गढ़वाल, हिमाचल** और **कश्मीर** की **पहाड़ियों** में; वास्तुकला का एक **अनूठा रूप** विकसित हुआ।
- कश्मीर गांधार क्षेत्रों (तक्षशिला, पेशावर, आदि) के करीब होने के कारण 5 वीं शताब्दी ईसवी तक **गांधार शैली से** काफी **प्रभावित** था।
- गांधार प्रभाव **गुप्त और उत्तर-गुप्त परंपराओं के साथ मिश्रित** हो गया जो इसमें **सारनाथ, मथुरा** और यहां तक कि **गुजरात** और **बंगाल** के केंद्रों से **लाए गए** थे।
- ब्राह्मण पंडित और बौद्ध भिक्षु अक्सर पहाड़ियों की यात्रा करते थे, जिसके परिणामस्वरूप पहाड़ियों में **हिंदू** और **बौद्ध** दोनों **परंपराओं का मेल** होता था।
- पहाड़ियों की वास्तुकला में **पक्की छतों वाली लकड़ी की इमारतों** की विशेषता थी।
- कुछ पहाड़ी क्षेत्रों में हमें **मुख्य गर्भगृह** और **शिखर** मिलते हैं जो **रेखा-प्रसाद या लैटिना शैली** में बने होते हैं, जबकि **मंडप काष्ठ वास्तुकला** के पुराने रूप का है।
- वास्तुकला की दृष्टि से **कश्मीर का कार्कोट काल** सबसे **महत्वपूर्ण** है।
- 8वीं और 9वीं शताब्दी के दौरान बना **पंड्रेथन मंदिर** एक तालाब के बीच में बने चबूतरे पर बना है।
- **लक्षणा देवी मंदिर** में **महिषासुरमर्दिनी** और **नरसिम्हा** की छवियां **उत्तर-गुप्त परंपरा** के प्रभाव झलकाती हैं।
- **कुमाऊं** में, अल्मोड़ा में **जागेश्वर** और **पिथौरागढ़** के पास **चंपावत** जैसे मंदिर इस क्षेत्र में **नागर वास्तुकला** के उदाहरण हैं।

जैन मंदिर वास्तुकला

- **जैन** हिंदुओं की तरह **विपुल मंदिर निर्माता** थे, और उनके पवित्र तीर्थ और तीर्थ स्थल **पूरे भारत में** पाए जाते हैं।
- **सबसे पुराने जैन तीर्थ** स्थल **बिहार** में पाए जाते हैं।
  - इनमें से **कई स्थल प्रारंभिक बौद्ध मंदिरों के लिए प्रसिद्ध** हैं।
  - दक्कन में, कुछ सबसे **महत्वपूर्ण जैन स्थल** एलोरा और ऐहोल में पाए जा सकते हैं।
- मध्य भारत में, **देवगढ़, खजुराहो, चंदेरी** और **ग्वालियर** में जैन मंदिरों के कुछ उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
- **कर्नाटक** में **जैन मंदिरों** की एक समृद्ध विरासत है और **श्रवणबेलगोला** में **गोमतेश्वर** की प्रसिद्ध मूर्ति, भगवान बाहुबली की ग्रेनाइट मूर्ति जो अठारह मीटर या सत्तावन फीट ऊंची है, दुनिया की सबसे ऊंची अखंड मुक्त संरचना है।
  - इसे मैसूर के **गंगा** राजाओं के **प्रधान मंत्री, चामुंडराय** द्वारा कमीशन किया गया था।

भारतीय मंदिर वास्तुकला का अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव

भारत से बौद्ध धर्म दुनिया के विभिन्न हिस्सों जैसे श्रीलंका, बर्मा, चीन, दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों आदि में प्रचार के रूप में, अधिकांश मंदिर भारत में विकसित मंदिर वास्तुकला की शैली से प्रभावित हुए हैं। भारत से बर्मा तक बौद्ध धर्म के प्रसार ने बर्मा में बुद्ध के सम्मान में कई मंदिरों और मूर्तियों का निर्माण किया।

- **खमेर मंदिर वास्तुकला**-
  - **वर्तमान कंबोडिया** के क्षेत्रों में फला-फूला।
  - इस प्रकार की मंदिर वास्तुकला का एक शानदार उदाहरण **कंबोडिया का अंगकोर वाट मंदिर** है।
    - 12वीं सदी में बना यह **दुनिया का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर** है।
    - **बलुआ पत्थर** और **लेटराइट मंदिर** में उपयोग की जाने वाली प्रमुख निर्माण सामग्री हैं।
- **इंडोनेशियाई वास्तुकला**-
  - मंदिर वास्तुकला की यह शैली **7वीं से 15वीं शताब्दी ईस्वी के बीच** की अवधि में फली-फूली।
  - इंडोनेशियाई मंदिर **बौद्ध और हिंदू** दोनों **धर्मों** के हैं।

- **भारतीय मंदिर वास्तुकला से प्रेरित** होकर, यहां के मंदिरों में इसके ऊपर एक **पिरामिडनुमा मीनार और प्रवेश के लिए एक पोर्टिको** है।
- **सबसे बड़ा बौद्ध मंदिर** इंडोनेशिया के बोरोबुदुर में पाया जाता है जिसका **निर्माण 8वीं शताब्दी ईस्वी** में हुआ था।

- **चंपा वास्तुकला-**
  - मंदिर वास्तुकला की यह शैली **छठी और सोलहवीं शताब्दी ईस्वी के बीच** वियतनाम के कुछ हिस्सों में विकसित हुई।
  - मंदिरों के **निर्माण में लाल ईंटों का प्रयोग** किया जाता था।

स्तूप स्थापत्य कला

स्तूप एक **शावाधन टीला** है, जो **आकार** में **गोलार्द्ध** है, जिसमें **बौद्ध भिक्षुओं** और **भिक्षुणियो** के **अवशेष** हैं। इसका **धार्मिक** और **सांस्कृतिक महत्व** है। **स्तूपों** का **निर्माण वैदिक काल** में शुरू हुआ और **अशोक** के **काल** में **महत्व** प्राप्त हुआ। **बौद्धों** ने स्तूप को **लोकप्रिय** बनाया।

स्तूपों के भाग

- **मेढ़ी** : यह स्तूप का मूल भाग है, जो बिना पकी ईंटों से बना है, जिसमें बौद्ध भिक्षुणियों और भिक्षुओं के अवशेष रखे जाते हैं।
- **अंडा** : ईंटों से बना बड़ा गोलार्द्ध गुंबद।
- **तोरण**: प्रवेश द्वार - आमतौर पर चारों दिशाओं में निर्मित होते हैं, जिनमें जटिल नक्काशी होती है और लकड़ी की मूर्तियों से सजाया जाता है।
  - प्रत्येक तोरण में दो ऊर्ध्वाधर स्तंभ और शीर्ष पर तीन क्षैतिज पट्टियाँ होती हैं।
- **प्रदक्षिणा पथ:** पूजा के प्रतीक के रूप में **परिक्रमा के लिए उपयोग** किया जाने वाला खुला मार्ग
- **हर्मिका**: अण्ड' के ऊपर एक छज्जे जैसी संरचना
- **छत्र**: हर्मिका के ऊपर तीन छतरियां बनाई जाती हैं।
- **यष्टि**: केंद्रीय छड़ या स्तंभ जिस पर छत्र रखा जाता हैं
- **वेदिका** : स्तूप वेदिका से घिरा होता है

  प्रतीक: प्रारंभिक अवस्था में, बुद्ध को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया था जो बुद्ध के जीवन की विभिन्न घटनाओं जैसे पैरों के निशान, कमल, सिंहासन, चक्र, स्तूप आदि का प्रतिनिधित्व करते थे।

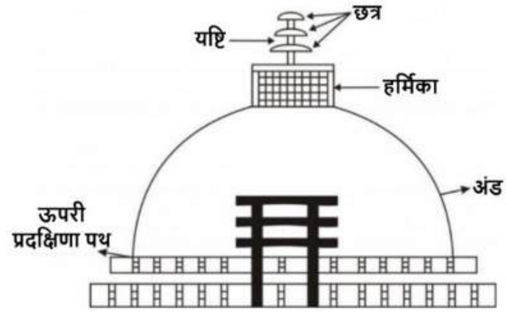

स्तूपों के प्रकार

<u>मुख्यतः चार प्रकार</u>

1. **शारीरिक स्तूप-** बुद्ध या किसी संत के शारीरिक अवशेषों पर बना।
2. **परिभोगिक स्तूप-**: संतों ,आचार्यो द्वारा उपभोग की गयी वस्तुओं पर बना।
3. **उद्देश्य मूलक स्तूप**: बोद्ध धर्म के प्रचार के उददेश्य से बना।
4. **पूजार्थक स्तूप -** पूजा के उद्देश्य से बना।

स्तूपों का दर्शन

- स्तूपों के निर्माण के पीछे **दार्शनिक अवधारणा का प्रभाव** था।
- **ऋग्वेद में ऊँची उठती हुई अभिव्यक्तियों** (जैसे- सूर्य की, आग्नि की ज्वाला , फैले वृक्ष) को **स्तूप** कहा गया है। इसी प्रकार **बोद्ध परम्परा** में **स्तूपो** को **आनद का प्रतीक** माना गया है। इसके **विभिन्न अंग**, अनेक **दार्शनिक अवधारणाओं** से जुड़े है जैसे- **अण्ड**-शान्ति का प्रतीक , **हर्मिका** - पवित्रता , **छत्रावलियां** चारो दिशाओं में बुध्द की शिक्षाओं का प्रतीक
- **वेदिका** - पवित्र भूमि तथा - **तोरण**- चारो दिशाओं का प्रतीक माने गए हैं।

स्तूपों का उदभव एवं विकास

- स्तूप की **चर्चा सर्वप्रथम ऋग्वेद** में प्राप्त होती है। **बोद्ध परम्परा** (महापरिनिर्वाण सूत्र) के अनुसार बुद्ध के **पूर्व चक्रवर्ती राजाओं** एव **संतो** के लिए **स्तूप** बनवाए जाते थे।
- **शतपथ बाहमण** में भी **चर्चा** मिलती है ।

मौर्यकालीन स्तूप

- **गौतम बुद्ध** की **मृत्यु** के **बाद**, **नौ स्तूपों** (राजगृह, वैशाली, कपिलवस्तु, अल्लकप्पा, रामग्राम, वेठपिड़ा, पावा, कुशीनगर और पिप्पलीवन) का **निर्माण** किया गया था।
- **अशोक** काल के दौरान, **84000 स्तूपों का निर्माण** किया गया था।
- **उदाहरण**:

1. <u>सांची</u>
  - यह **म.प्र. के रायसेन जिले में** स्थित है।
  - यहां कुल **तीन स्तूप** है।
  - **महास्तूप**- अशोक निर्मित
  - **दस बोद्ध भिक्षुओं** की **याद में** बना
  - बुद्ध के शिष्यों **सारिपुत्र और महामोदगल्यान** का स्तूप
  - साची का स्तूप कलात्मक ढंग से का**फी भव्य** स्तूप है जो आज भी सुरक्षित है
  - **तोरण द्वार** पर काफी **कलात्मक ढंग से विविध विषयों** के **शिल्पो को उत्कीर्ण** किया गया है ।

2. <u>पिपराहवा स्तूप</u>
  - **उत्तर प्रदेश** में मौजूद यह **सबसे पुराना** स्तूप है।
  - गणवरिया के **निकटवर्ती टीले पर** प्राचीन **आवासीय परिसरों** और **मंदिरों की खोज** हुई थी
  - **पिपराहवा-गंवरिया** को शाक्य साम्राज्य की राजधानी **कपिलवस्तु** भी माना जाता है, जहां सिद्धार्थ गौतम ने अपने जीवन के पहले 29 वर्ष बिताए थे।

3. <u>बैराठ स्तूप, राजस्थान</u>
  - एक **गोलाकार टीला** और एक **परिक्रमा पथ** वाला भव्य स्तूप।
  - पॉलिश **बलुआ पत्थर** से बना है। **सतह को पॉलिश** किया गया है।
  - **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व** में **निर्माण** शुरू हुआ

4. <u>सारनाथ / धामेक स्तूप, उत्तर प्रदेश</u>
  - **वाराणसी** के पास
  - **ऋषिपत्तन** या **मृगदाव** जैसे अन्य नामों से भी जाना जाता है। सारनाथ शब्द सारंगनाथ (हिरणों का स्वामी) नाम के भ्रष्ट होने से आया है।
  - **अशोक द्वारा निर्मित**, बाद में **गुप्त काल में पुनर्निर्माण** किया गया।
  - भगवान बुद्ध ने अपना **पहला उपदेश** सारनाथ में **4 आर्य सत्यों** के बारे में दिया था।
  - **सर अलेक्जेंडर कनिंघम** (प्रथम - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के जनरल), ने 1834 और 1836 के बीच धामेक, धर्मराजिका और चौखंडी स्तूपों की खुदाई की।

5. <u>अमरावती स्तूप</u>
  - **पहली और दूसरी शताब्दी ईसवी** की अवधि के दौरान निर्मित।
  - वेदिका के भीतर संलग्न **प्रदक्षिणापथ** (परिक्रमा पथ) को बहुत अधिक **कथात्मक मूर्तिकला** के साथ चित्रित किया गया है।
  - अमरावती स्तूप का **तोरण (प्रवेश द्वार) समय के साथ नष्ट** हो गया है।
  - यहां मौजूद स्तूप कला रूपों में **बुद्ध के जीवन की घटनाओं** और **जातक कथाओं** को दर्शाया गया है।
  - सांची स्तूप की तरह, अमरावती स्तूप का प्रारंभिक चरण **बुद्ध छवियों से रहित** है।

6. <u>नागार्जुनकोंडा स्तूप</u>
  - स्थल पर **गौतमीपुत्र विजया सातकर्णी का एक शिलालेख** भी खोजा गया है, और यह साबित करता है कि इस समय तक **इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म** फैल गया था।
  - **अमरावती शैली के प्रभाव** को देखा जा सकता है।

7. <u>भरहुत स्तूप</u>
  - यह **मध्य प्रदेश** के सतना जिले में है। इसका **निर्माण मुख्यतः अशोक** के **द्वारा** कराया गया
  - **शुंगो के संरक्षण में** इसका और विकास हुआ।
  - भरहुत के स्तूप का **सम्पूर्ण ढांचा प्राप्त नहीं** हुआ है।
    - **केवल पूर्वी तोरण** द्वार एवं वेदिका का भाग जनरल कनिघम ने प्राप्त किया था
    - इसकी वेदिका पर **स्तूप की मूल आकृति** बनी है जिसके आधार पर यह माना जाता है कि यह **घटां आकृति** था

गुफा वास्तुकला

- गुफा वास्तुकला को अक्सर **शैलकृत वास्तुकला** कहा जाता है।
- **भारतीय शैलकृत वास्तुकला** गुफाओं में देखी जाने वाली वास्तुकला के मुख्य रूपों में से एक है।
- यह **ठोस प्राकृतिक चट्टान** को **तराश** कर एक **संरचना** बनाने का अभ्यास है।
- मूर्तियों के साथ-साथ कुछ गुफाएं **चित्रकारी** के लिए **प्रसिद्ध** हैं जैसे **अजंता** की गुफाएं।
- **प्राचीनतम गुफाएँ प्राकृतिक** गुफाएँ थीं जिनका उपयोग लोग विभिन्न प्रयोजनों के लिए करते थे जैसे कि तीर्थ और आश्रय।